Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247**
Vol. VIII. 2016 **IMPACT Factor - 3.9651**

कला सिद्धान्त में स्वच्छन्दतावाद

सुनील कुमार वर्मा
अध्यापक
विभाग कला
एम.एफ.ए., नेट, का.हि.वि.वाराणसी

18वीं शताब्दी तक कला पुरानी रूढ़ीवादी मिथकों व कुछ कला सम्बन्धी में बंधी प्रतीत होती है। परन्तु 19वीं सदी के प्रारंभ से परम्परागत व समाजिक धार्मिक निष्ठाएं टुट रही थी व आधुनिक दर्शन में मानव का स्वतंत्र स्वयंपूर्ण व बहुरंगी व्यक्तित्व उसकी मनोवैज्ञनिक चिकित्सा एवं ऐन्द्रिय अनुभूतियों के पीछे हुए रहस्य की खोज एवं तत्व बाहरी उद्देश्यो के बन्धनों से मुक्त होकर कार्ययान्वित हो रहें थे। विद्वानों ने इस नवीन अभिव्यक्ति प्रमुख विचारधारा को स्वच्छन्दतावाद की संज्ञा प्रदान की। रूसो इस विचार धारा के प्रवक्ता थे। उन्होने स्पष्ट घोषणा की थी कि मनुष्य एक स्वतंत्र प्राणी के रूप में में जन्म लेता है किन्तु हर समय वह नियमों सिद्धान्तो तथा रूढ़ियों में जकड़ा रहता है। सन्1789 की फांसीसी राज्य कान्ति से उत्पन्न विचारो से स्वच्छन्दतावाद के जन्म की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

राजनीतिक क्षेत्र के समान कला जगत में भी स्वतंत्रता की इच्छा बलवती हो गई। बन्धनों को त्याग कर कलाकार प्रकृति के नजदीक अपने आप को महसूस करने लगे तथा प्रकृति के उदभवों से सहारा लेकर अपनी अभिव्यक्ति को गौड़ रखा। परिणामतः कुछ कलाकार नियमबद्ध परम्परा मोह तथा आडम्बर प्रियता का विरोध करने लगे। एक विद्वान आलोचक के शब्दों में स्वच्छन्दवाद इस प्रकार एक तो नवशास्त्रवाद के विरोध में उत्पन्न हुआ दूसरी ओर नवशास्त्रवाद के विरोध की भावना का उदय तत्कालीन परिस्थितियों के कारण हुआ जिससें कलाकारों की विचारधारा में परिवर्तन कर भावना उदभव हुई और इस का परिणाम स्वच्छन्दवाद का जन्म हुआ कलाकार का व्यक्तित्व स्वतंत्र होते ही सृजन क्षेत्र में कलाकार की आत्मिक अभिव्यक्ति व विशुद्व सौन्दर्य की खोज के बीच द्वन्द्व शुरू हुआ। ऐसी अवस्था में आधुनिक कला गतिमान हो गई व उसके विभिन्न पहलु रूपायित हुए जैसे –2 कलाकार की अभिव्यक्ति गौड़ होती गई वैसे–2 उसके विचारों रंगो तथा कुची प्रहारों में भी पराकाष्ठा होने लगी तो तत्कालीन विरोधी कला आलोचकों का सहारा लेते हुए इन्होनें अरूपता व अबूझ नामों से सुशोभित किया। सामान्य दर्शक कला को वास्तविक सृष्टि को प्रतिरूपायित करने का साधन मात्र सामझता है जब वह इस द्वष्टिकोण को लेकर कला कि रसा अनुभूति करता हैं तब वह असफल हो जाता है फिर

उसका कला की निन्दापान करने के लिए विवश होने लगता है। इसलिए आधुनिक कलाकृति के रसग्रहण के लिए अनिवार्य है कि दर्शक इस पूर्वाग्रह दूषित द्वष्टिकोण को त्यागे।

स्वच्छन्दतावाद की परिभाषा व अर्थ – हिन्दी स्वच्छन्दतावाद शब्द अंग्रेजी के रोमांटीसिज्म शब्द का निकटतम पर्याय है। अभिधागत अर्थ की द्वष्टि से इन शब्दों से अवधारणायें बन्ती हैं। उनकी अपेक्षा इनके सन्दर्भित अर्थ काफी संशलिष्ट और विस्तृत है और परस्पर कुछ भिन्न भी। कहा जाता है कि स्वच्छन्दतावाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले सन् 1992 में जर्मन अलोचक श्लेगर ने किया और उसे अभिजात्यवाद का विरोधी सि़द्धान्तवाद माना। 19वी शताब्दी में यूरोप में रोमांटीसिज्म शब्द एक नवीनधारा और आन्दोलन के रुप में प्रचलित हुआ तथा वैश्विक चिन्तन का अंग बन गया।

परिभाषा– स्वच्छन्दतावाद क्या है अथवा इसकी स्पष्ठ परिभाषा क्या हो सकती है। स्वच्छन्दतावाद का नाम लेते ही अभिजात्यवाद की याद ताजा होने लगती है अक्सर लोग कह बैठते है कि स्वच्छन्दतवाद अभिजात्यवादी विचाराधारा के विपरित है। फिर भी कुछ विद्वानों ने स्वच्छन्दतावाद की परिभाषाएं देने का प्रयास किया है।

एम्बर काम्बी – स्वच्छन्दतावाद को बाहारी अनुभूतियों से पलायन तथा आन्तरिक अनुभूतियों में केन्द्रित होना मानते हैं।

पेटर के शब्दों में – अदभुत और सुन्दर का भव्य मि़श्रण स्वच्छन्दतावाद है।

हीगल के अनुसार – भौतिकवाद पर आत्मवाद की विजय स्वच्छन्दतावाद है।

प्रो0 कैजामिया के शब्दों में – स्वच्छन्दतावाद आत्मा का विजय घोष है।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है। स्वच्छन्दतावाद कला ऐसी कला परिकमा है जो प्राचीन सिद्धांतो की जकड़ से मुक्ति पाकर एक नवीन जीवन की प्रतिष्ठा करना चाहती है। जो नियमों सिद्धांतो और परम्पराओं का उल्लंघन करके मुक्तभावनाओं को अभिव्यक्त करती है।

स्वच्छन्दतावाद **धारा** की प्रमुख विचारधाराये

वास्तविक जगत से पलायन – स्वच्छन्दतावादी कलाकार सांसारिक संकीर्णताओं कठोरताओं रूढ़ीगत मान्यताओं से तंग आकर कल्पनाओं के स्वपनलोक में विचरण करते हैं। जहां संसार की बाधायें इन्हें व्याकुल नही करती। ऐन्द्रीय जन्य व सौन्दर्य व निजी अभिव्यक्ति इन कलाकारों को आकर्षित करती है। इसलिए इन की कला में रहस्यवाद व अतिमानवीय तत्वों का समावेश हो गया है।

नवसर्जन प्रवृति का आग्रहः– स्वच्छन्दतावादयों के लिए निजी रूचि वैयक्तिक दृष्टि और निजी भावना अधिक महत्वपूर्ण होती है। हालांकि प्रचीनकाल भी कहीं न कही सृजनशीलता का आभास होता रहता है। लोक कला एवम् बाल चित्रकला में भी मूल्य सृजनशील का बहुत ही स्वाभाविक विकास होता है। आधुनिक कला का अध्ययन करते समय देखें की उपयुक्त कलाओं से आधुनिक कलाओं से अपरिमित प्रेरणा मिलती है। वन्य मानव की कला लोक कला व बाल चित्र कला से आधुनिक कला इस विचार से भिन्न है कि आधुनिक कला रूपांतर्गत तत्वों के शास्त्रीय अध्ययन का परिणाम है। कलाकार की व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति है या उसमें कलाकार द्वारा की गई आन्तरिक सत्य की खोज है किन्तु इन कलाओं में जो आधुनिक कला के समान गुण द्वष्टि गोचर है वे पूर्णतया सर्जन किया कि

स्वाभाविक्ता से सिद्ध हुए हैं। आधुनिक कला का बाहरी उद्देश्य नही होता जबकि एक कलाएं बाहरी उद्देश्य से प्रेरित होती है

मध्य युग की ओर कला प्रत्यावर्तन– शास्त्रीय काल में बद्धता नियम बद्धता तर्कशीलता तथा बौधिकता की प्रवृतियां प्रमुख रही हैं। मध्य काल की समाप्ति के बाद नव शास्त्रवादी युग में इन्ही प्रवृतियों का पुनः जागरण होता है। इस नियम बद्धता बौधिकता और तरकाधिक्य से उब कर स्वच्छन्दतावादी मध्य युग की ओर उन्मुख होता है। नियम बद्धता के स्थान से मुक्ति और तर्कशीलता के स्थान पर सहजता की प्रवृतियों का विकास हेाता है। भावुकता भावनात्मकता और रोमानी मनोहर स्वपनिलता इस युग की कलाओं में परिलक्षित होते हैं।

कल्पनाधिक्य प्रेम –कलाकार हर पल अपने इर्द–गिर्द समाज को कल्पनाओं रोमानी दुनिया में देखना चाहता है। इसलिए वह कभी –2 समाज से कटा हुआ अपने आप को विक्षिप्त महसूस भी करता है। उसे वस्तु की बाहरी ओर यथार्थ की अपेक्षा उसके अभ्यतरिक कल्पित तथा भावनाओं के आधार पर सृजित रूप के प्रति अधिक आस्थावान व आकृष्ट होता रहता है। स्थूल की अपेक्षा सुक्षम से इसे मोह होता है। कल्पनाधिक्य के कारण हर तथ्य को अध्यात्मिक रूप में देखना इन कलाकारों की विशेषता है। कल्पनाधिक्य का तत्व नवीनता सौन्दर्य शक्ति सहानभूति सुक्षमता और रहस्यानुभूति का कारण बनता पर यही तत्व कला के अमूर्त सूक्ष्म विरलता की ओर अग्रसर करता है। जिसका अतिरूप इस काव्य का दोष माना जा सकता है।

सौन्दर्य आकर्षण – सौन्दर्य के प्रति जिज्ञासा, सौन्दर्य के प्रति आकर्षण, सौन्दर्य के प्रति अहेतु कला भाव ये मानव के ललित जीवन के महत्वपूर्ण के तत्व है। वस्तु को उसके अंगीक अनुपात और भातिक संरचना के सन्दर्भ में देखना यथार्थवादी दृष्टिकोण है। पर उसी वस्तु के आभ्यन्तरिक सौन्दर्य को महसूस करके अभिभूत होना हमारी सौन्दर्य चेतना का प्रमाण है। प्रकृति को एक वनस्पति विज्ञानी के स्वरूपों में देखा जा सकता हैं। स्वच्छन्दतावादी कलाकारों की कृतियों का अगर निरीक्षण करें तो उनके चित्ररंगों व हर एक तूलिका संघातों में प्रकृति के रूप गंध, स्पर्श व निजी स्वादजन्य इन्द्री या अभिव्यक्तिओ का सौन्दर्य अभिव्यक्त हुआ है। पिकासों ने ग्वैनिका को चित्रित करने के पश्चात् स्पष्ट किया था कि समाज के प्रति निष्कर्तव्य होना कलाकार के लिए सम्भव नही है। वानगफ ने लिखा है। कि वह ऐसे समाजिक विषयों से अपनी आत्मअभिव्यक्ति को जोड़कर चित्रण करना चाहते है कि वों कृति जहां भी टंगे वहां अपनत्व का अहसास हो।

रंग व संघातों में अदभुत तत्व – स्वच्छन्दतावादी कलाकारों को सही रूप में अदभुत का पुनः जागरण कहा गया है। कल्पनाशीलता और अदभुत का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। जहां शास्त्रीय कला में आदर्शए यान्त्रिकए दैवीयए अतिमानवीयए निर्दोष आदि तत्वों की प्रधानता होती है वहां स्वच्छन्दतावादी कृति कल्पनाशील, अदभुत, कोमल और आकर्षक को निजी अभिव्यक्ति व्यक्त करने की प्रेरणा प्रदान करती है। आधुनिक कला के कुछ प्रशंसको की धारणा है कि आधुनिक कला परवर्ती कला से अधिक विकसित है किन्तु उनकी यह धारणा तथ्य पर आधारित नही है। वास्तव में विकास की

कल्पना विज्ञान व गणित जैसे विषय जिस तरह लागू किए जाते हैं वैसे कला को नही लागू किया जा सकता है। कला मानव की भावनात्मक प्रभाव को प्रकाशित करती है और भावना संवेग की तीव्रता के दर्शन हो तो चली आ रही वास्तविक स्वरूपों में परिवर्तन करना पड़ता है।

दुःखानुभ्ति भावाभिव्यक्ति का अधिकाधिक चित्रण – स्वच्छन्दतावादी कलाकार अपनी समाजिक व निजी पीडा़ को व्यक्त करने के लिए परम्परागत चली आ रही कला परिपाटी को तोड़ने में सफल हुआ है। इसलिए जब भी समाजिक गतिविधियों में उत्थान या पतन देखता है तो वह पीड़ा से द्रविभूत हो जाता है। वह दूसरों के कष्ट क्लेशों को स्वयं में समाविष्ट कर लेता है। लोगों की वेदना व्यथा को अपनी अभिव्यक्ति में समाहित करके उसे निजी संवेगों से जोड़ने लगता है। जो उसके चित्रण में परिलक्षित होता है। स्वपीड़ा में ही इसको आनन्द की अनुभूति होती है लेकिन इनका दुख वास्तविक नही होकर कल्पनिक होता है। स्वच्छन्दतावाद में स्वतः दुःखनुभूति की अधिकता देखकर गेट ने क्षुब्द होकर कहा कि स्वच्छन्दतावाद रूग्ण है।

निष्कर्षः– स्वच्छन्दतावाद के उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह न तो राजनीति का कोई वाद और नही दर्शनशास्त्र का कोई सिद्धान्त है और एक द्वन्द्व यह है कि कला में कलाकार अपने आंतरिक जीवन को महत्व दे या बाह्य दृश्य जगत को – यानि कल्पना और यथार्थ में से किसको अधिक महत्व दे। मुख, क्ले, गोग्वा आदि कलाकारों की कला में उनकी आंतरिक खलबली का दर्शन है जबकि पिकासो, ब्राक, मातिस व यथार्थवादी कलाकारों की कला में जड़ सौन्दर्य का दर्शन है। असल में यह विभेदीकरण ही निराधार है। स्त्री सौन्दर्य के भावनात्मक या काल्पनिक पक्ष को यदि हम छोड़ देते हैं तो उसके सौंदर्य में और कठपुतली के सौन्दर्य में क्या अन्तर है? बाह्य सौन्दर्य भी व्यक्ति की भावना व कल्पना पर निर्भर है। बाह्य जगत से घृणा होना या प्रसन्न होना दोनों आंतरिक भावनिक स्थितियाँ हैं। भावना तो कई तरह की होती हैं। मोह, प्रेम, करुणा, भय, घृणा आदि भावनाओं में से किसको महत्व दिया जाये यह कलाकार की संवेदनशीता की दिशा, व्यक्तित्व व परिस्थिति पर निर्भर करता है। एक ओर मनुष्य का आंतरिक जीवन बाह्य जगत के परिणाम से निष्पन्न होता है तो दूसरी ओर मनुष्य अपनी मनोवृति के अनुसार बाह्य जगत को ग्रहण कर लेता है। 'दृष्टि और सृष्टि' का विभाजन नहीं किया जा सकता। "सृष्टि मेरी कल्पना है।" यह शोपेनहौर का सिद्धान्त है व उसका दार्शनिकों ने व मनोविज्ञान ने समर्थन किया है। दृश्य जगत हरेक दर्शक को एक सा प्रतीत नहीं होता, मनुष्य की कल्पना परोक्ष रुप से वास्तविकता से जुड़ी रहती है। भारतीय दर्शन में इसलिए लिखा है कि "संसार एक माया है।"

सन्दर्भ

1 *सृनृत कुमार वाजपेयी, पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र का इतिहास (राधा प्रकाशन, नई दिल्ली–110002)*
2 *रवि साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर) पृ.335*
3 *डॉ. अजब सिंह, नवस्वच्छन्दतावाद (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)*
4 *डॉ नगेन्द्र सिंह, भारतीय संस्कृति का इतिहास (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)*